“कक्षा 9 वी में अध्ययनरत ग्रामीण एव्म शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियो के शैक्षिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन”

शोधकर्ता-

नाम - सुमन वर्मा

एम.एड. (प्रशिक्षार्थी),

प्रगति महाविद्यालय,

चौबे कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.)

पता - वार्ड नं.18, डॉ. खूबचंद बघेल चौक

शिक्षक कॉलोनी तिल्दा नेवरा

रायपुर, (छ.ग.), पीन न. 493114

सम्पर्क : 8103139098

ई-मेंल - vsuman400@gmail.com

शोध निर्देषिका-

नाम- गुन्जन शर्मा

प्रगति महाविद्यालय,

चौबे कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.),

पता- प्रगति महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सम्पर्क : 9907718875

ई -मेंल - gunjansharma0712@gmail.com

सार

यह अध्ययन रायपुर ज़िले में स्थित ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के नवमीं कक्षा के पर केंद्रित था। अध्ययन का उद्देश्य था कि विद्यार्थीयों में होने वाले शैक्षित चिंता का अध्ययन करना था। शोध में कुल 100 विद्यार्थीयों को सामिल किया गया था।

प्रस्तावना

शिक्षा मानवीय चेतना का वह ज्योतिर्मय सुसंस्कृत पक्ष है जिससे उसके व्यक्तित्व का चहुमुखी विकास होता है। शिक्षा के द्वारा मानव का मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक व आर्थिक विकास होता है। अन्नंत काल से मनुष्य कुछ न कुछ सीखता आया है और इसी परिवर्तन के फलस्वरूप आज मानव सभ्यता के ऊँचे शिखर पर चढ़ने में समर्थ हुआ है। प्राचीन समय में विभिन्न देशों में समाज के आदशों और उद्देश्यों के अनुसार "शिक्षा" को विभिन्न अर्थ दिए गए थे।

उदाहरणनार्थ:-

प्राचीन भारत में शिक्षा को आत्मज्ञान और आत्म प्रकाशन का साधन माना गया था। आज शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान का माध्यम ही नहीं है अपितु रोजगार का जरिया भी बन गया है। पहले की अपेक्षा आज शिक्षा को ग्रहण करने के लिए विशेष, प्रविधि एवं अनुशासन की आवश्यकता होती है आज बच्चे को शिक्षा के माध्यम से न केवल भौतिक बातों का ज्ञान, अपितु अन्य कई व्यवहारिक पक्षों से जुड़े ज्ञान विषयक पाठ्यक्रम को पढ़ाया जाता है, ताकि वे न केवल आयोजित करे बल्कि भविष्य में अपनी जीविका हेतु सार्थक विकल्पों का चयन कर सका

शैक्षिक चिंता

चिंता वह भावना है जिससे व्यक्ति अपने आपको अकेला और असहाय समझता है। व्यक्ति उस भावना की उपस्थिति भी सामाजिक वातावरण को शत्रुतापूर्ण व बिरोधी ही नहीं मानता है बल्कि वह सामाजिक वातावरण में भय भी रखता है। चिंता की भावना उस समय भी उत्पन्न हो सकती है जब व्यक्ति की सुरक्षा भावना को चोट पहुंचती है।

चिंता विकारों के एक ऐसा समुह है जो मानसिक विकार चिंता और डर की भावनाएँ उत्पन्न होती है। विद्यार्थी की शैक्षिक चिंता को हम जीवन के प्रति बाणात्मक अभिवृति के रूप में देख सकते हैं। आज के इस सुरक्षित एवं बहुप्रतिस्यधी बातावरण में व्यक्ति को जब अपेक्षित सफलताएं नहीं मिलती तो उसे अपने भविष्य की सुरक्षा की भावना से चोट लगती है। और वह सामान्य व्यक्ति से अधिक चिंताग्रस्त हो जाता है। तथा लगातार ऐसी परिस्थिति में रहने के कारण उसकी अभिवृति जीवन के विपरीत या ऋणात्मक होने लगती है।

समस्या का कथन

“ कक्षा 9 वीं में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन ”

प्रकार्यात्मक परिभाषा

चिंता से प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित होता है, चाहे वह एक छोटा बालक हो या वृद्ध व्यक्ति बालक को अपने परीक्षा चिंता, पाठ्यक्रम की चिंता, संस्कृत विषय की उच्चारण सम्बन्धि चिता होती है तो बुवाओ को उज्वल भविष्य की कभी-कभी इस प्रकार की चिंता से व्यक्ति मानसिक रोग का शिकार भी हो जाता है।

राजर्स के अनुसारः- चिंता एक ऐसी अनुभुति है जो उनकी स्वयं की विचारधारा में भाग उत्पन्न करती है।"

आर-एम- के अनुसार (¼1950½ भय के संकेत की अनुभुति की कोई माता जो व्यक्ति अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक समझता है चिंता कहलाती है।

अध्ययन का उद्देश्य

किसी भी शैक्षिक शोध का प्रमुख उद्देश्य शैक्षिक समस्याओं का समाधान एवं उस समस्या के समाधान द्वारा शिक्षा का विस्तार कर ज्ञान भण्डार में वृद्धि करना होता है। कोई भी समस्या उद्देश्य पूर्ति में आई बाधा के कारण उत्पन्न होती है।अध्ययन के उद्देश्यों के निर्धारण से पहले शिक्षा के उद्देश्य को जानेगें- जैसा कि महात्मा गाँधी जी ने कहा है- "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा मनुष्य के शरीर, मन एवं आत्मा में अन्तर्निहित सर्वोत्तम शक्तियों के सर्वांगीण विकास से है। वही सच्ची शिक्षा है जो इन उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती है।

उपरोक्त कथनों से स्पष्ट है कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को प्रेरित करना भी है। अतएव यह आवश्यक है कि बालक के विकास के लिए उसकी परेशानियों को समझना तथा उसे शिक्षा द्वारा संभवतः दूर करने का प्रयास करना ।

प्रस्तुत लघुशोध के अध्ययन में निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं-

(1) ग्रामीण विद्यार्थी की शिक्षा चिंता का अध्ययन करना,

(2) गहरी छात्र-छात्राओं की शैक्षिक चिंता का अध्ययन ।

(3) ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना

परिकल्पना से तात्पर्य उस संभावित उत्तर से होता है, जो समस्या समाधान के लिए हम सोचते है। यह समस्या समाधान के लिए उचित दिशा प्रदान करती है जिस पर चलकर हम समस्या का समाधान सही रूप में निकाल पाते हैं। अतः परिकल्पना को संभावित समाधान या सिद्धांत भी कहा जाता है। जिसे अस्थायी रूप से सही मानकर उसकी पुष्टि करने का प्रयास किया जाता है।

परिकल्पना की विशेषताएँ-

1.परिकल्पना परीक्षण योग्य होनी चाहिए क्योंकि वस्तुनिष्ठ विश्वसनीय तथा वैज्ञानिक ज्ञान की रचना संभव होती है।

2.परिकल्पना प्राकृतिक नियमों जो सत्य प्रमाणित किए जा चुके है, उनके विरोध में नहीं होती है।

3.परिकल्पना संभवतः अपने अनुसंधान क्षेत्र से संबंधित अन्य परिकल्पना के अनुरूप होनी चाहिए।

4.परिकल्पना में तर्क संगत एकता तथा बोधगम्यता, सरलतम रूप से स्पष्ट होनी चाहिए।

5.परिकल्पना से अनेक परिणाम उपलब्ध होने चाहिए अतः परिकल्पना निगमन चिंतन पर आधारित होना चाहिए।

साख्यिकीय विश्लेषण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध हेतु निर्मित की गई परिकल्पाओं की पुष्टि करना अनुसंधान का मूल उद्देश्य है जिसके लिये प्रदत्तों की व्याख्या विश्लेषण के आधार पर सांख्यिकीय का उपयोग किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय प्रविधियों प्रयोग में लाई गई है:

1. केन्द्रीय प्रवृत्ति माप-माध्य (Mean)
2. प्रमाप विचलन-मानक विचलन (Standard Deviation)
3. सार्थक अन्तर के लिये क्रान्तिक अनुपात (Critical Ratio)
4. 1-Test

परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं परिणाम

सारणी क्रमांक 1

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांकों का माध्य प्रमाप विचलन,
C. R. **मूल्य तथा सार्थकता दर्शाने वाली सारणी**

क्र.	चर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	C. R	सार्थक है
1	ग्रामीण विद्यार्थी	100	10.63	3.26	2.08	0.05 सार्थक है
2	शहरी विद्यार्थी	100	11.63	3.34		

df = 198

व्याख्या :-

उपरोक्त सारणी दर्शाता है कि 100 ग्रामीण एवं 100 शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांको का माध्य क्रमशः 10.63 व 11.63 तथा उनका प्रभाव विचलन 3.26 व 3.34 है। ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांको के माध्य में अंतर है, ग्रामीण विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता शहरी विद्यार्थियों से कम है।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांको के माध्य में अन्तर की सार्थकता के लिए C.R. मूल्य की गणना की गई जो 2.08 प्राप्त हुआ। 198 df के लिए 05 स्तर पर 1 का टेबल मूल्य 1.96 है, जो C.R. की गणना मूल्य से कम है। अतः ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 9 वीं के विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांको के माध्यों में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 9 वीं • विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांको के माध्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा अतः अस्वीकृत हुई ।

आरेख क्रमांक 1

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांकों की संख्या, माध्य एवं प्रमाप विचलन दर्शाने वाला आरेख

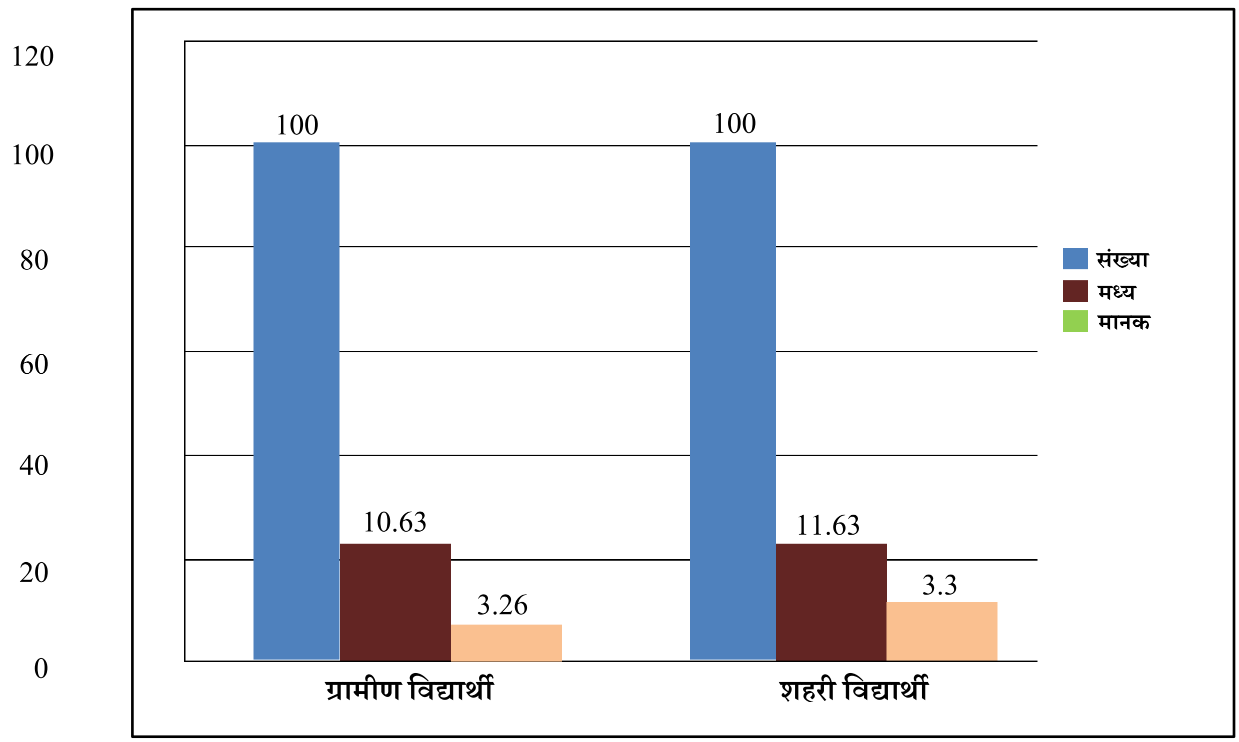

परिकल्पना क्रमांक H2 –

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 9 वीं के बालकों में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांको के माध्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 2

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 9 वीं के बालकों में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांको का माध्य प्रमाप विचलन C.R. मूल्य तथा सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

क्र.	चर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	C. R	सार्थक है
1	ग्रामीण विद्यार्थी	50	10.94	2.86	1.97	0.05 सार्थक है
2	शहरी विद्यार्थी	50	10.88	4.38		

df = 98

व्याख्या :-

उपरोक्त सारणी दर्शाता है कि 50 ग्रामीण व 50 शहरी विद्यालय में अध्ययनरत् बालको में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांको के माध्य क्रमशः 10.94 व 10.88 है तथा मानक विचलन 2.86 व 4.38 है। ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् बालकों में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांको के माध्य में अंतर पाया गया। ग्रामीण एवं शहरी बालको में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांको के माध्य में अंतर की सार्थकता के लिए C.R. मूल्य की गणना की गई जो 1.97 आया है। 98 df के लिए 05 स्तर पर ज टेबल मूल्य 1.96 जो कि गणना मूल्य से कम है। इस प्रकार परिकल्पना ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 9वीं के बालको में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांकों के माध्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा। अतः परिकल्पना अस्वीकृत हुई।

आरेख क्रमांक 2

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 9 वीं के बालकों में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांकों की संख्या, माध्य एवं प्रमाप विचलन दर्शाने वाला आरेख

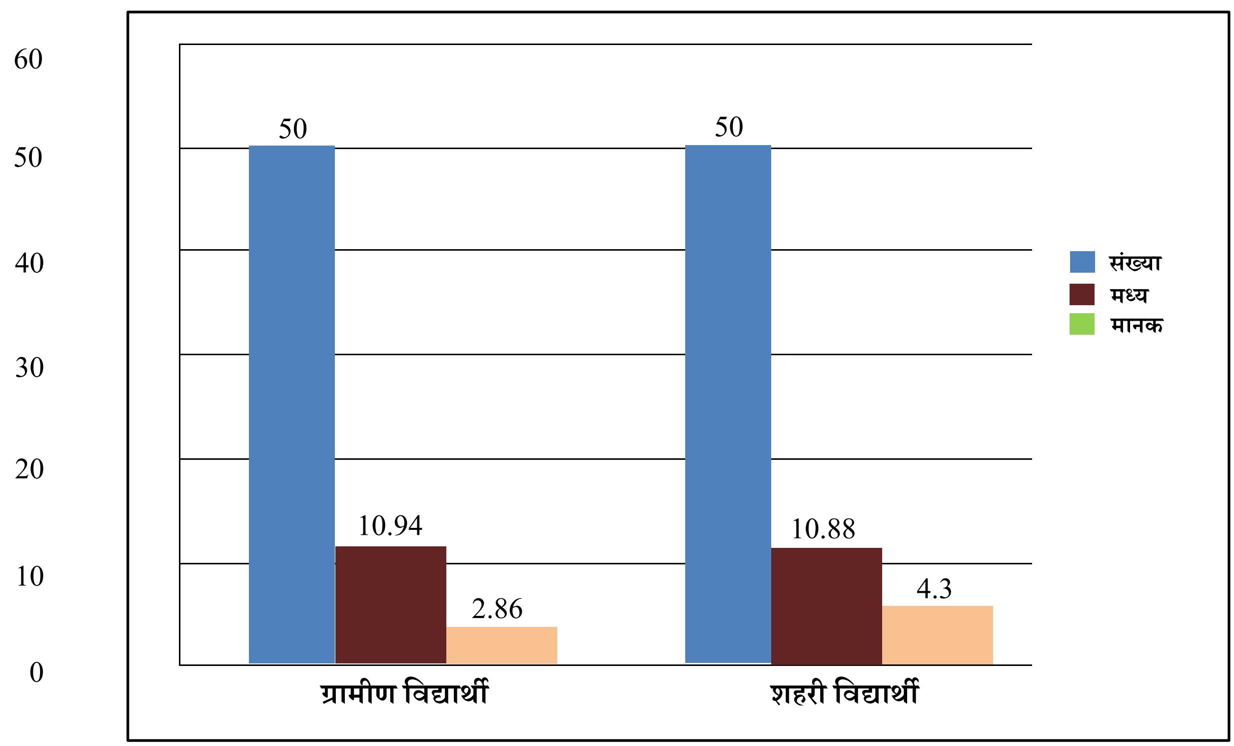

परिकल्पना क्रमांक H3 -

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 9 वीं के बालिकाओं में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांको के माध्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 3

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 9 वीं के बालिकाओं में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांको का माध्य प्रमाप विचलन C. R. मूल्य तथा सार्थकता दर्शाने वाली

सारणी

क्र.	चर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	C. R	सार्थक है
1	ग्रामीण विद्यार्थी	50	12.32	3.64	2.82	0.05 सार्थक है
2	शहरी विद्यार्थी	50	10.38	3.39		

df = 98

व्याख्या :-

उपरोक्त सारणी दर्शाता है कि 50 ग्रामीण व 50 शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिका में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांको के माध्य क्रमशः 12.32 व 10.38 तथा मानक विचलन 3.64 व 3.34 है। ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय में अध्ययनरत् बालिकाओं में शैक्षिक चिंता के माध्य में अंतर पाया गया। ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांको के माध्य में अंतर की सार्थकता के लिए C.R. मूल्य की गणना की गई जो 2.82 आया है। 98 df के लिए 05 स्तर पर 1 का टेबल मुख्य 0.01 जो कि गणना मूल्य से कम है। अतः ग्रामीण एवं शहरी कक्षा 9 वीं में अध्ययनरत् कक्षा 9 वीं के बालिकाओं में प्राप्तांको की माध्य में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा। अतः परिकल्पना
अस्वीकृत हुई।

आरेख क्रमांक 3

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 9 वीं के बालकों में शैक्षिक चिंता के प्राप्तांकों की संख्या, माध्य एवं प्रमाप विचलन दर्शाने वाला आरेख

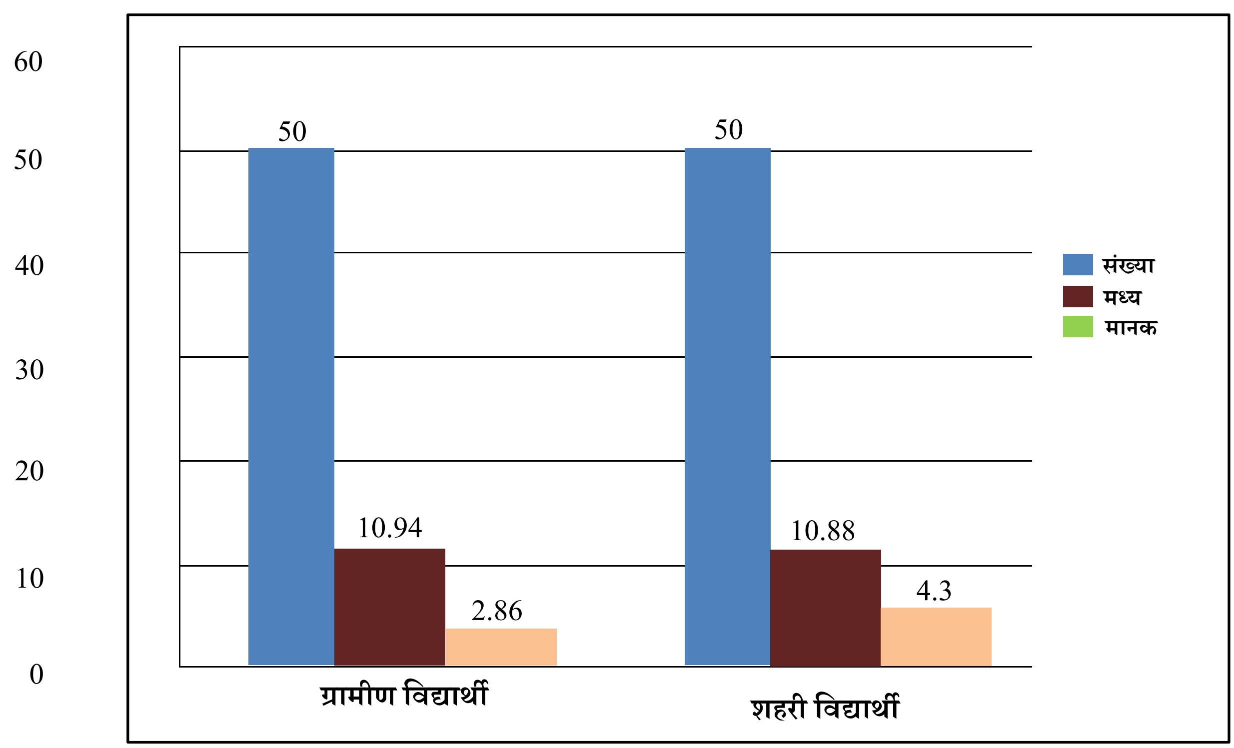

निष्कर्ष:-

परिकल्पना के परिणाम से स्पष्ट होता है, कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक चिंता में अंतर पाया गया इसका प्रमुख कारण यह हो सकता है कि वर्तमान समय में शहरी विद्यार्थी शिक्षा के प्रति जितने जागरूक हैं ग्रामीण विद्यार्थी शिक्षा के प्रति उतना जागरूक नहीं हैं। अतः शहरी अभिभावकों की अपेक्षा ग्रामीण अभिभावक भी शिक्षा को लेकर उतनी जागरूकता नहीं है। जिसके कारण दोनों विद्यार्थियों के शैक्षिक चिंता में अंतर परिलक्षित होता है।

सुझाव

1. प्रस्तुत लघुशोध में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता के संदर्भ में निम्न लिखित सुझाव प्रस्तुत किए गए है-
2. माता-पिता को बच्चों के लिए अनुकूल वातावरण के निर्माण हेतु हर संभव प्रयास कर तथा अपेक्षा रखें जिससे बालक चिंता ग्रस्त न हो।
3. शिक्षकों तथा अभिभावकों द्वारा बालक के मन में शिक्षा को लेकर किसी प्रकार का नकारात्मक विचार न आने देने का प्रयास करना चाहिए।
4. विद्यार्थियों के मानसिक विकास हेतु उन्हें अध्ययनरत् एवं अन्य स्वरूप गतिविधि हेतु पूर्ण अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। जिससे विद्यार्थियों को उस प्रकार की वातावरण का सामना करना पड़े जो शैक्षिक चिंता को दूर कर पायें।
5. शिक्षकों को विद्यार्थियों को उत्सावर्धन करना चाहिए।
6. शिक्षकों को उनके भविष्य के बारे में अवगत करना चाहिए एवं निर्भीक बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डेविड एम. हैमिल्टन होली (2012 निहित नस्लीय मूल्यांकन और रूढ़िवद्धता चिंता प्रभाव
2. माधुर एस. खान डबल्यू (अक्टूबर 2011 परीक्षा चिंता और स्कूली बच्चों के बीच शैक्षिक प्रदर्शन पर सम्मोहन का प्रभाव
3. सुसान (2011 अस्तित्व की चिंता और तथा कथित न्यूरोटिक चिंता के बीच अंतर क्या है सच्चे जीवन शक्ति की अनिवार्य शर्त
4. हुआग (2010) "चिंता और प्रतिक्रिया नकारात्मक"
5. देबिनगेराब्द (2008 असामान्य मनोविज्ञान टोरंटो वेशेनिका"
6. डाउनी जोनाथन (2008 प्रीमियम विकल्प चिंता टाइम्स लंदन को प्राप्त किया गया"
7. गोल्डा एस. (2007 विता विकारो की रोकथाम मनोरोग 19 (6)" के इंटरनेशनल की समीक्षा"
8. पारस नाथ राय (2002) "अनुसंधान परिचय आगरा लक्ष्मीनारायण अग्रवाल"
9. बारलो डेविड एच (2000) "भावना सिद्धांत के नजरिए से चिंता से रहस्यों और उसके विकारों"
10. पाठक पी.डी. (2000) "शिक्षा मनोविज्ञान आगरा विनोद पुस्तक मंदिर"